IJAER/ Nov-Dec 2021/Volume-10/Issue-6 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

मध्यप्रदेष के जबलपुर संभाग में कोरोना महामारी के कारण आदिवासी छात्रों की दूरस्थ षिक्षा की समस्यायें ।

डॉ. बी.आर. बरोदे,
शोध निर्देषक

श्रीमती मनीशा सोनी
शोधार्थी

सारांश

चीन देष की वुहान लैब में ईटर्न की भूल के कारण विष्व में कोरोना वायरस फैलने की सजा, पूरा विष्व भुगत रहा है । करोड़ों लोगों के घर उजड़ गए हैं । लगभग दो वर्शों तक स्कूल–कॉलेज बंद रहे, 'लॉकडाउन' के कारण लाखों बेरोजगार हो गए ।

स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री जी ने कहा कि कोरोना काल में ऑनलाइन षिक्षा, नई संस्कृति है लेकिन पर्याप्त सुविधाओं के अभाव में कई दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है । अनेक विद्यार्थियों के पास न स्मार्टफोन हैं न ही लैपटाप । आदिवासी इलाकों में बिजली और नेटवर्क की समस्या है । ऑनलाइन षिक्षा कोरोना से बचाव का उपाय तो हैं, परन्तु समाधान नहीं । ''

जबलपुर संभाग के आदिवासी इलाकों में दूरस्थ षिक्षा के केन्द्र स्थापित है, परंतु कोरोना महामारी के कारण अध्यापन कार्य की संपर्क कक्षायें बाधित रहीं ।

दूरस्थ एवं पत्राचारः–

दूरस्थ षिक्षा प्रारंभ होने के पूर्व देष के कुछ विष्वविद्यालयों द्वार पत्राचार माध्यम से विभिन्न उपाधि पाठ्यक्रम संचालित किए जाने थे । हमारे देष में पत्राचार पाठ्यक्रम की स्थापना हमारे विद्वानों की प्रेरणा का प्रतीक है और यह न केवल छात्रावासो वरन संबंधित महाविद्यालय से भी परे शैक्षिक सुविधाओं की सीमाओं का विस्तार करने हेतु हुई शैक्षिक क्रांति का परिणाम है, जो भारत तथा बाहर के अन्य देषों में कहीं भी समस्त योग्य व इच्छुक लोगों का उच्च षिक्षा पहुंचने के लिए और इस नये क्षेत्र में सफलता हेतु प्रयासरत है । देष में स्कूलों एवं कॉलेजों के शैक्षणिक स्तर को उठाने के लिए सतत् कठिन परिश्रम की आवष्यकता है । उच्च षिक्षा से वंचित लोगों को षिक्षा के अवसर प्रदान करने तथा जो नियमित विद्यालयी एवं महाविद्यालयीन षिक्षा प्राप्त करने में आर्थिक एवं अन्य कारणों से असमर्थ है उन्हें अपना भविश्य संवारने के लिए प्रोत्साहित करना । पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारंभ करने का श्री गणेष 1962 में हुआ था । बम्बई विष्वविद्यालय द्वारा इन्टर कामर्स, बी.कॉम एव ंबी.ए. के पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गए इन प्रमाणियों की षिक्षा, गुजराती एवं हिन्दी माध्यम से दी

जाती थी । दिल्ली विष्वविद्यालय द्वारा त्रिवर्शीय उपाधि पाठयक्रम में बी.ए. एव बी.कॉम का पत्राचार पद्धति का शुभारंभ हुआ ।

उपरोक्त विष्वविद्यालयों के अतिरिक्त देष में अनेक विष्वविद्यालयों द्वारा पत्राचार माध्यम अंगीकार किया गया राश्ट्रीय षिक्षा निति 1986, स्पश्ट रूप से मुक्त विष्वविद्यालय की ओर दूरवर्ती अधिनियम तथा संचार माध्यमों की भूमिका के महत्व को मान्यता प्रदान .करती है । राश्ट्रीय षिक्षा नीति के प्रतिवेदन में स्पश्ट उल्लेख किया गया है कि

^The open university system has been initiated in order to angment opportunities for higher education and as on instrument of democreatising education. The Indira Gandhi National Open University, established in 1985 in fulfillment of these objectives will be strengthened. This powerful instrument will have to be developed with care and extend with education – NPE (1986)*

राश्ट्रीय षिक्षा नीति में राश्ट्रीय षिक्षा प्रणाली के विकास समानता के लिए षिक्षा, प्रौढ़ षिक्षा, महिला षिक्षा, तकनीकी एवं प्रबंध षिक्षा, षिक्षा व्यवस्था को कारगर बनाने, षिक्षा की विशय वस्तु एवं प्रक्रिया को नया मोड़ देने तथा षिक्षा की प्रबंध व्यवस्था का पुर्नगठन करने पर विषेश बल प्रदान किया गया है । इन कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में दूरस्थ षिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है ।

मध्यप्रदेष में दूरस्थ षिक्षा का एकमात्र शासकीय विष्वविद्यालय है, म.प्र. भोज (मुक्त) विष्वविद्यालय भोपाल है । इस विष्वविद्यालय के म.प्र. में 600 से अधिक अध्ययन केन्द्र है । जबलपुर संभाग के अंतर्गत मण्डला, डिण्डौरी, कटनी, सिवनी, बालाघाट, छिंदवाड़ा, नरसिंहपुर एवं जबलपुर में बी.ए., बी.कॉम, बी.एस.सी. उपाधियों एवं रीजनल सेन्टर जबलपुर में लाइब्रेरी साइंस के साथ स्नातकोत्तरीय उपाधियों के विभिन्न पाठ्यक्रमों की षिक्षा प्रदान की जा रही है ।

म.प्र. शासन द्वारा 17 सितम्बर 1991 को ''म.प्र. भोज (मुक्त) विष्वविद्यालय अधिनियम 1991'' नामक अधिनियम पारित किया गया । यह अधिनियम 1 अक्टूबर 1992 को प्रभावषील हुआ ।

दूरस्थ षिक्षा से कामकाजी एवं दूरदराज के गरीब तथा मध्यम वर्गों के छात्रों को उच्च षिक्षा ग्रहण करने की सुविधा रहती है । जबलपुर संभाग के अंतर्गत मण्डला, निवास, डिंडौरी, बालाघाट आदि क्षेत्रों में निवास कर रहे आदिवासी परिवारों के बच्चों को उच्च षिक्षा ग्रहण करने में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है विषेशकर कोरोना बीमारी के चलते बच्चों की पढ़ाई प्रायः बंद सी हो गई । समाचार पत्रों से ज्ञात हुआ कि वर्श 2019 के अंत में चीन के बुहान लैब में इंटर्न की गलती से लीक हुआ वायरसः खास– कोरोना वायरस के फैलने को लेकर अलग–अलग खुलासों के बीच अमेरिका चैनल का दावा चीन देष के

बुहान की वायरोलॉजिस्ट शी मेंगुली चमगादड़ों पर शोध कर रही थी । संभव है कि मेंगुली ने ही लैब में कोरोना वायरस बनाया हो । उसने कई चूहों को वायरस का इंजेक्षन लगाया था । विष्व के अनेक देषों में कोरोना वायरस फैल गया । लाखों लोगों की मृत्यु हो गई । दैनिक भास्कर जबलपुर के अंक दिनांक 7.8. 2020 में एक समाचार प्रकाषित हुआ था कि जबसे शहर में कोरोना वायरस संक्रमण का प्रकोप शुरू हुआ है तभी से सरकारी व गैर सरकारी शैक्षणिक संस्थानों को पूरी तरह बंद कर दिया गया है ।

जबलपुर संभाग के अंतर्गत आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र जैसे मण्डला जिले के नारायणगंज में बी.ए, बी. एस.सी., बी.कॉम, मवई में बी.ए., घुघरी में बी.ए., चाबी में बी.ए., शटरी में बी.ए. अंजनिया में बी.ए., बी.एस.सी. , बवालिया में, बी.ए., बी.एस.सी., भुआबिछिया में बी.ए. , मोहगांव में बी.ए. पाठ्यक्रमों की षिक्षा प्रदान की जा रही है । दूरस्थ षिक्षा प्रणाली के अंतर्गत इन गांवों में अध्ययन केन्द्रों में संपर्क कखायें आयोजित की जाती थीं परंतु कोरोना महामारी के कारण आदिवासी बच्चों को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा है इन क्षेत्र के गांवों में सबसे प्रमुख समस्या इंटरनेट की थी लगभग दो वर्शों तक 2020–21 एवं 2021–22 सत्रों में पढ़ाई ठप्प रही ।

ऐसी ही परिस्थितियॉ डिण्डौरी के गांवों के छात्र–छात्राओं की रही । म.प्र. भोज मुक्त विष्वविद्यालय के जबलपुर रीजनल सेन्टर द्वारा स्नातकोत्तरीय विशयों के एम.कॉम, एम.ए., एम.एस.सी. तथा ग्रंथालय विज्ञान स्नातक उपाधि के लिए संपर्क कक्षाओं का आयोजन किया जाता है । संपर्क कक्षाओं के माध्यम से छात्र–छात्राओं को अध्यापन के साथ – साथ उनकी कठिनाईयों को हल किया जाता है । संपर्क कक्षाओं की समयावधि में दूरदराज से आने वाले आदिवासी तथा अन्य छात्रों को रहने खाने की समस्या का सामना करना पड़ता है । जबलपुर में आदिवासी छात्रों के लिए छात्रावास की व्यवस्था नहीं है । मंहगाई के कारण अनेक छात्र संपर्क कक्षाओं में उपस्थित नहीं हो पाते हैं । कोरोना महामारी के कारण ऑनलाइन षिक्षा भी बाधित रही । कोरोना बीमारी के भय के कारण बुजुर्ग अध्यापकों ने संपर्क कक्षाओं में आने से विवषता प्रकट की ।

एम.एस.सी. वनस्पति विज्ञान, प्राणी विज्ञान, रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र विशयों की प्रायोगिक कक्षायें, कोरोना के कारण बाधित रही । जबलपुर एवं मण्डला जिलों में शासकीय महाविद्यालय है कोरोना के समय इन महाविद्यालयों में प्रयोगषालायें बंद थी । तृतीय एवं चतुर्थ वर्ग का स्टाफ कोरोना महामारी के कारण महाविद्यालय नहीं आया था । प्रदेष शासन द्वारा लाकडाउन लगाने से अध्ययन, अध्यापन कार्य ऑनलाइन चलाया जा रहा था । अनेकों छात्रों के पास स्मार्ट फोन नहीं थे । अभिभावकों की आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं रही थी क्योंकि निजी व्यवसायों में काम करने वालों को पूरा वेतन प्राप्त नहीं होता था । बाजार एवं दुकानें बंद थी ।

कोरोना महामारी के कारण जबलपुर जिले और आसपास के जिलों में दो वर्शों तक भय का वातावरण निर्मित हो गया था अनेक लोगों की मृत्यु हो गई ।

रानी दुर्गावती विष्वविद्यालय जबलपुर के कला संकाय भवन में इंदिरा गांधी मुक्त राश्ट्रीय विष्वविद्यालय नई दिल्ली का अध्ययन केन्द्र संचालित हो रहा है । इसकी स्थापना का श्रेय डॉ. एच.पी. दीक्षित जी को है । प्रदेष में दूरस्थ षिक्षा द्वारा अध्ययन–अध्यापन कार्य के लिए प्रो. दीक्षित वर्श 1990 से प्रयासरत रहे । इग्नू का प्रादेषिक कार्यालय भोपाल में स्थापित है ।

मध्यप्रदेष भोज मुक्त विष्वविद्यालय भोपाल में डॉ. एच.पी. दीक्षित जुलाई 1996 से जून 2001 तक कुलपति पद पर कार्यरत रहे, उन्होंने ही जबलपुर में भोज विष्वविद्यालय के रीजनल सेन्टर की स्थापना करवाई थी ।

(कोरोना महामारी के कारण)

(ऑन लाईन षिक्षा के संदर्भ में समाचार पत्रों में प्रकाषित समाचार पत्रों का संदर्भ संलग्न है)

ऑनलाईन षिक्षा

(1) दैनिक भास्कर समाचार पत्र दिनांक 07/08/2020

(प) षिक्षकों के गले नहीं उतर रही ऑन लाइन पढ़ाई ।

(पप) एण्ड्रायड मोबाइल और नेटवर्क की समस्या

(पपप) षिक्षकों को स्कूल व अपने घरों से ही ऑनलाइन पढ़ाने के निर्देष

(पअ) दूरस्थ इलाकों में पर्याप्त संस्था में टॉवर नहीं है ।

(2) दैनिक भास्कर समाचार पत्र दिनांक 19/07/2020

(प) विषेशज्ञ बोले– कोरोना का सबसे ज्यादा असर गरीब बच्चों और छात्राओं की पढ़ाइ पर लॉकडाउन के कारण दुनियाभर में 150 करोड़ बच्चों का स्कूल जाना बंद ।

(पप) भारत देष में 33 करोड़ स्कूली में सिर्फ 10 प्रतिषत ही ऑनलाइन ।

(3) दैनिक भास्कर समाचार पत्र, जबलपुर दिनांक 05/09/2020

(प) व्यवसायिक षिक्षा का सहारा रेडियो, दूरदर्षन और हमारा घर हमारा विद्यालय योजना

(पप) स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से कोरोनाकाल में ऑनलाइन षिक्षा को नई संस्कृति बताया, लेकिन पर्याप्त सुविधाओं के अभाव में कई दिक्कतों का सामना

करना पड़ रहा है । अनेक विद्यार्थियों के पास न स्मार्टफोन हैं न ही लैपटॉप । आदिवासी इलाकों मे बिजली और नेटवर्क की समस्या है । ऑनलाइन षिक्षा कोरोना से बचाव का उपाय तो है, परंतु समाधान नही ।

(पपप) महानगर की दौड़ में शामिल जबलपुर जैसे शहर में डेढ़ लाख छात्रों के पास स्मार्टफोन ही नहीं है । इससे गरीब तबके के विद्यार्थी खासतौर पर आदिवासी इलाकों के बच्चे काफी परेषान हैं ।

(पअ)महाराश्ट्र के आदिवासी इलाकों में ऑनलाइन षिक्षा का सपना कोसों दूर नजर आ रहा है । नन्दूवार, गड़चिरोली, पालघर अणे ग्रामीण जैसे आदिवासी बहुत इलाकों में मोबाइल नेटवर्क ही नहीं रहता । प्रदेष के आदिवासी विकासमंत्री के.सी. पाड़ली ने दैनिक भास्कर से बातचीत में व्यक्तिगत अधिगम को महत्व देगा । अधीन शैक्षिक औद्योगिकी एवं षिक्षा के नवाचार प्रवर्तनों की जानकारी से दूरस्थ षिक्षा को बढ़ावा मिला है । इससे षिक्षा के गुणात्मक स्वरूप में स्थिरता आई है ।

आकाषवाणी, दूरदर्षन, दृष्य – अन्य कैसेट्स, दूरभाश, कम्प्यूटर आदि के उपयोग से विद्यार्थियों को लाभ प्राप्त होता है ।

दूरस्थ षिक्षा में डायरेक्टरी सिस्टम, इलेक्ट्रॉनिक डाक (ई–मेल) सम्मेलन शब्द प्रकिया, बुलेटिन बोर्ड, समाचार पत्र–पत्रिकायें, डेटाबेस आदि का बहुतायत उपयोग किया जा रहा है ।

विशय विषेशज्ञों द्वारा पाठ्य सामग्री की रचना करना

दूरस्थ षिक्षा के पाठ्यक्रम अनुसार विशय दल की नियुक्ति की जाती है । इस दल में एक एडीटर और एक लेखक रहता है । विशय वस्तु पारम्परिक विष्वविद्यालयों के विषेशताओं के दल के द्वारा तैयार किया जाता है । उनकी सहायता के लिए षिक्षा तकनीकी के विषेशज्ञ होते हैं, जो दूरवर्ती षिक्षा विभाग से चुने जाते हैं दृष्य –अन्य सामग्री का भी इन्हीं के द्वारा निष्चित किया जाता है ।

अध्ययन केन्द्रों पर परामर्ष सेवाएँ :–

विद्यार्थियों को समय– समय पर परामर्ष के लिए सूचना भेजी जाती है । अध्ययन केन्द्रों में संपर्क कार्यक्रम आयोजित कर छात्रों की समस्याओं का निदान किया जाता है । इस शैक्षिक केन्द्रों पर परामर्षदाता रहते है । शैक्षिक केन्द्र में विद्यार्थी महीने में चार बार जा सकते हैं ।

संदर्भ ग्रंथ :–

(1) आर.ए.शर्मा – दूरवर्ती षिक्षा प्रकाषक आर.लाल बुक डिपो, मेरठ 2012 (2) पूनम मदान – भारत में षिक्षा व्यवस्था का विकास तथा समस्याएँ प्रकाषक अग्रवाल पब्लिकेषन्स आगरा 2012, (3) आर.पी. पाठक, दूरस्थ षिक्षा के आयाम ।